वैदिक साहित्य में विश्वकल्याण की भावना

"वेद "संसार की सर्वाधिक प्राचीन पुस्तक है, तथा भारतीय मनीषा के अनुसार वेदों के जन्म सृष्टि के साथ ही हुआ, एवं वेदों को अपौरुषेय माना जाता है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार भी संसार की सर्वप्रथम पुस्तक "ऋग्वेद" है। सारे संसार को ज्ञान और विज्ञान का आलोक वैदिक साहित्य से ही मिला, अत: मनुस्मृति में वर्णित है।

"वेदाद् धर्म: प्रवहति शैलाभिनदी यथा", अर्थात वेदों से धर्म" वैसे ही प्रवाहित है, जैसे पर्वत से नदियाँ। संसार में यदि धर्म दर्शन का कही मूल है, तो वह भी वेदों में ही है।

सार्वभौम वैदिक धर्म न केवल एक देश व जाति तक सीमित है, अपितु विश्वजनीन है, क्योंकि इसमें मानवमात्र के कल्याण के सदुपदेश हैं। "बाइबल" तथा "कुरान" व संसार के अन्य धर्मग्रन्थों में किसी विशेष जाति व वर्ग के लिए सदुपदेश मिलते हैं। बाइबिल संसार को "ईसाई" बनाने पर जोर देती है, तथा "कुरान" संसार को मुस्लिम बहुल बनाने पर जोर देती है, किन्तु वैदिक साहित्य के सदुपदेश न केवल भारतीयों के लिए, अपितु संसार के मानवमात्र के लिए हैं, इसी कारण "वेद" को वेद (ऋ. १/१६४/२६) में "धेनु" - कामधेनु कहा गया है क्योंकि यह सभी कामनाओं को दोह देती है। स्वयं वेदों के शब्दों में-

"दुहे सायं दुहे प्रातर्दुहे मध्यन्दिनं परि।
दोहा मे अस्य संयन्ति तान विद्मानुपदस्वत:।।
(अथर्व ४/११/१२)

अर्थात सायंकाल दोहता हूँ, प्रात:काल दोहता हूँ, तथा इसके जो दोह= दूध उत्तमता से प्राप्त होते हैं उन क्षीण न होनेवाले को हम जानें। वैदिक साहित्य एक ऐसी कामधेनु है जो विश्वकल्याण हेतु, दूध ही दूध देती है, जिसका पान कर मानवमात्र का जीवन कल्याणमय बन सकता है।

नकिर्देवा मिनीमसि (ऋ १०/१३४/७)

अर्थात - न हम घातपात करते हैं, और ना ही फूट डालते हैं। वेद हिंसा तथा घातपात का अत्यन्त विरोधी है साधारण जीवन में हिंसा वेद को अभिमत नही है, क्योंकि हिंसा दुर्गुणों की खान है। अत: ऋषियों ने यमों में अहिंसा को प्रथम स्थान दिया है।

न वि जानामि यदिवेदमस्मि (ऋ १/१६४/३७)

अर्थात- आत्मा न वाणी के द्वारा प्राप्त होता है, न मन से और न आँख से। अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों आत्मा का ज्ञान कराने में असमर्थ हैं। ईश्वरीय कृपा से ही आत्मज्ञान हो सकता है,

ज्योतिर्वृणीत तमस: (ऋ३/३९/७)

विज्ञानी मनुष्य अन्धकार से प्रकाश को चुने।

अन्धकारी तथा प्रकाश का भेद जिसे ज्ञात होगा, वही अन्धकार त्याग कर प्रकाश का संवरण करेगा।

या ते अग्ने पर्वतस्येव (ऋ ३/५७/६)

अर्थात्- वेद यह ज्ञानधारा है, जो सृष्टि के आरम्भ में मानवीय कल्याण के लिए ईश्वर ने बहाई है,

यथेमां वाचं कल्याणीम् (यजु. २६/२)

अर्थात कल्याणमयी यह वेद वाणी मानवमात्र के कल्याण के लिए कहता हूँ।

ऋतम् चिकित्व: (ऋ ५/१२/२)

हे मानव! तू सत्य को जान।

मा स्रेघत सोमिन:। (ऋ ७/३२/९)

हे सोमवालो! हिंसा मत करो।

त्वं वृध इन्द्र (ऋ ६/२०/११)

हे ऐश्वर्य सम्पन्न। तू वृद्धों की सेवा कर।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि (यजु ४०/२)

इस विश्व में कर्मो को करता हुआ, शतायु बन।

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् (ऋ १०/५३/६)

मनुष्य बन और देवों की हितकारी सन्तान उत्पन्न कर।

ये वैदिक ऋचायें तो उदाहरण मात्र हैं, वेदों में पदे पदे विश्वकल्याण एवंम् मानवीय उत्थान की पावन प्रेरणायें समाहित हैं जिनको समझे बिना मानवीय जीवन का लक्ष्य अधूरा है।

सनातन वैदिक धर्म को भूलकर ही संसार में सर्वत्र आतंक, हिंसा, लूट, अन्याय व अधर्म का साम्राज्य व्याप्त है। "धर्म" के नामपर साम्प्रदायिकता, मतवाद, एवंम् आडम्बर बढ़ते जा रहे हैं। जहाँ वैज्ञानिक उन्नति चरमसीमा पर है, वहाँ संकीर्ण मानसिकता के कारण मानव अशान्त एवं चिन्ताकुल है, इस दुरवस्था पर क्षोभ प्रकट करते हुए अनलवर्षी कवि रामधारी सिंह लिखते है-

"यह प्रगति निस्सीम नर का, यह अपूर्व विकास। चरणतल भूगोल मुठ्ठी में निखिल आकाश किन्तु बढ़ता ही गया मस्तिक जो अनिशेष। छूट कर पीछे गया है, वह हृदय का देश।"

इस "हृदय देश" से मानव की पहचान तभी हो सकती है, जब वह अन्तर्मुखी एवंम विवेकी बने, वह विवेकी तभी बन सकता है जब ज्ञान और विज्ञान के अपार सागर वैदिक साहित्य में अवगाहन कर विचारों के रत्नों को प्राप्त करे। क्योंकि विचारों के अनुरुप ही जीवन बनता है। आज अपेक्षा है कि विश्वकल्याण के लिए वैदिक साहित्य का प्रसर निखिल विश्व में हो, तभी आतंक, हिंसा, द्वेष, अन्याय एवंम् अधर्म का यह विनाशकारी दावानल शान्त हो सकता है, एवंम् मानव अपने अमूल्य दुर्लभ जीवन को लक्ष्योन्मुख बना सकता है।....

डा.महाश्वेता चतुर्वेदी